वर्ष - 6वां प्रारंभ

अंक - 21वां

# चहकती चेतना

धार्मिक बाल त्रैमासिक पत्रिका

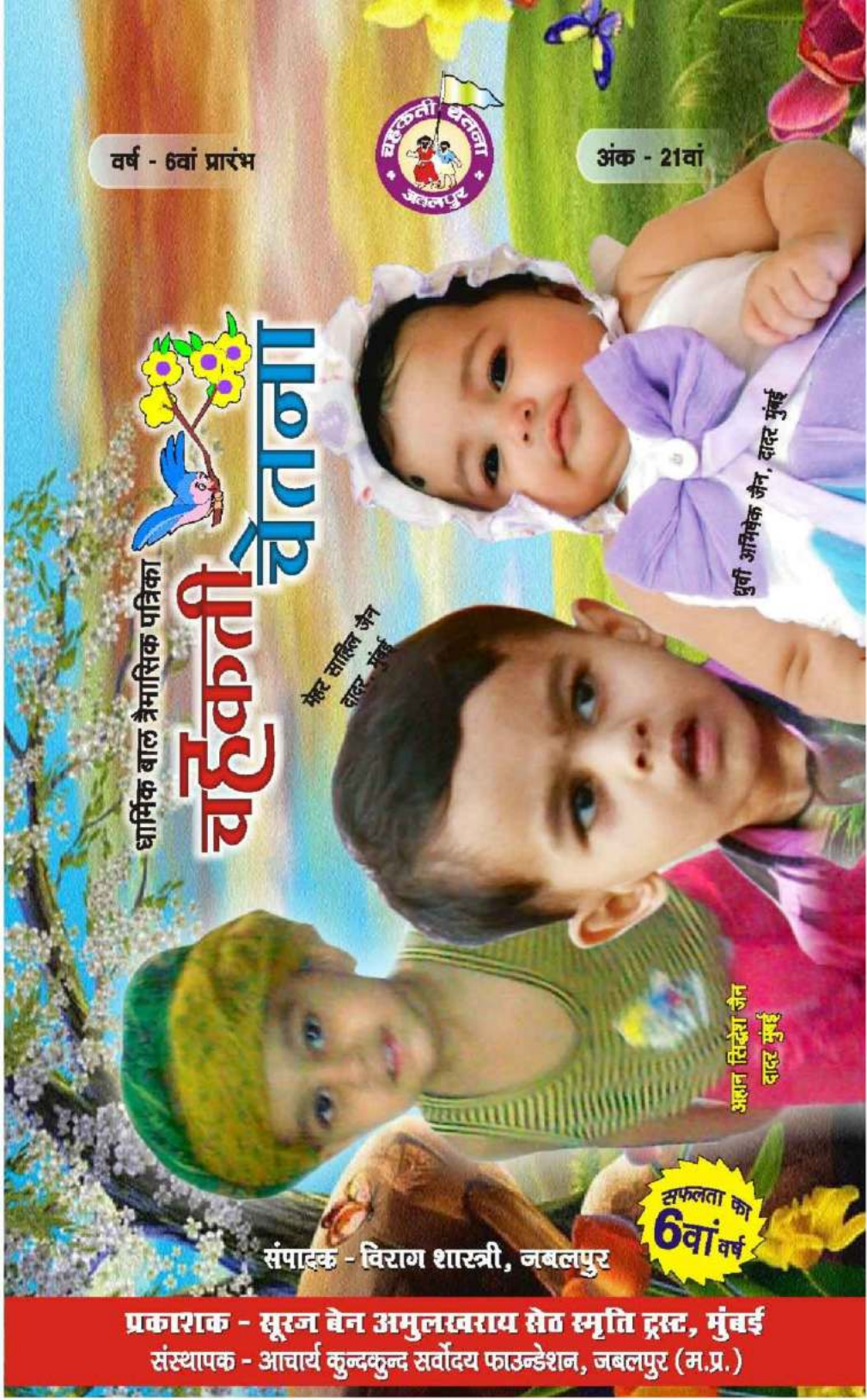



सफलता की 6वां वर्ष

संपादक - विराग शास्त्री, जबलपुर

प्रकाशक - सूरज बेन अमुलखराय सेठ स्मृति ट्रस्ट, मुंबई

संस्थापक - आचार्य कुन्दकुन्द सर्वोदय फाउन्डेशन, जबलपुर (म.प्र.)

आध्यात्मिक, तात्त्विक, धार्मिक एवं नैतिक

बाल त्रैमासिक पत्रिका

# चहकती चेतना

**प्रकाशक**
श्रीमति सूरजबेन अमुलखराय सेठ स्मृति ट्रस्ट, मुम्बई

**संस्थापक**
आचार्य कुन्दकुन्द सर्वोदय फाऊन्डेशन, जबलपुर म.प्र.

**संपादक**
विनय शास्त्री, (जबलपुर), देवलाली

**प्रबंध संपादक**
श्रीमति स्मिता जैन, देवलाली

**प्रकाशकीय प्रबंधक**
श्री मनीष जैन 'मंगलम्', जबलपुर

**डिजाइन/ ग्राफिक्स**
गुरुदेव ग्राफिक्स, जबलपुर

**परमसंरक्षक**
श्री अनंतराय ए.सेठ, मुम्बई
श्री प्रेमचंदजी कजाड, कोटा

**संरक्षक**
श्री आलोक जैन, कानपुर
श्री सुनीलभाई. जे. शाह, मावंदर, मुम्बई

**प्रकाशकीय व संपादकीय कार्यालय**
"चहकती चेतना"
फ्लेट नं.210, न्यू कहान नगर सोसायटी
वेलतगांव रास्ता, साम रोड, पो. देवलाली
जि. नासिक 422401 महा.
मो. 9373294684, 0253-2491044
e-mail - chehaktichetna@yahoo.com



| | | |
|---|---|---|
| 1. | हमारे तीर्थक्षेत्र | 1 |
| 2. | ई-नंबर का सच | 2-4 |
| 3. | दिगम्बरत्व की महिमा | 5 |
| 4. | अब नहीं सोचूंगा | 6-7 |
| 5. | सब्जी वाली का दान | 8 |
| 6. | मौर्य सम्राट और जैन धर्म | 9 |
| 7. | मुनिवर का उपदेश | 10-11 |
| 8. | गाते-गाते | 12 |
| 9. | महाबली कौन | 13-14 |
| 10. | भक्तामर | 15-16 |
| 11. | कविता सच / सहयोग | 17 |
| 12. | कॉमिक्स | 18-19 |
| 13. | गेम | 20-21 |
| 14. | समाचार | 22-23 |
| 15. | हेड फोन | 24 |
| 16. | जन्मदिन | 25 |
| 17. | ई-नंबर | 26-28 |


सदस्यता शुल्क
400 रु. (तीन वर्ष हेतु)
एक प्रति 20 रु.

पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के
सम्पूर्ण ऑडियो - वीडियो प्रवचन, प्रवचन
साहित्य एवं अन्य अनेक जानकारियों के लिये अवश्य देखें - वेबसाइट

**www.vitragvani.com**

सदस्यता राशि अथवा सहयोग राशि आप चहकती चेतना के नाम से ड्राफ्ट/चैक/मनीआर्डर से भेज सकते हैं। आप यह राशि कोर बैंकिंग से "चहकती चेतना" के बचत खाते में जमा करके हमें सूचित सकते हैं।
पंजाब नेशनल बैंक, फुहारा चौक, जबलपुर
बचत खाता क्र.- 1937000101030106


संपर्क सूत्र – श्री कुन्दकुन्द – कहान पारमार्थिक ट्रस्ट, मुम्बई
Ph. No.:- 022-26130820, 26104912.
E - mail :- Info@vitragvani.com

वैभव! भोजन करने के बाद अपना होमवर्क पूरा कर लेना– मम्मी ने वैभव से कहा ।

मम्मी! अभी नहीं, बाद में कर लूँगा।

बाद में नहीं अभी करो। फिर तुम्हें नींद आने लगती है।

मम्मी प्रॉमिस! आज मैं रात को सोने के पहले पूरा होमवर्क कर लूँगा।

मुझे तुम्हारी कोई बात नहीं सुनना। तुम्हें अभी होमवर्क करना है।

माँ! ये पशु – पक्षी कितने सुखी हैं ना।

क्या मतलब ? मैं कुछ समझी नहीं।

माँ! ये पशु – पक्षी किसी स्कूल में नहीं जाते तो इन्हें होमवर्क भी नहीं करना पड़ता। अपनी इच्छा से जहाँ चाहे वहाँ चले जाते हैं। कोई टोकने वाला नहीं। कितना आजाद जीवन है इनका।

अच्छा तो यह बात है। तुम कहना क्या चाहते हो ?

काश! मैं भी पक्षी होता तो जो मन में आता वह करता और खूब घूमता। अनेक देशों की सैर करता और यदि बंदर होता तो इस पेड़ से उस पेड़ पर कूदता। फल खाता अपने दोस्तों के साथ मस्ती करता। न होमवर्क की चिन्ता, न मेडम का डर।

वाह! क्या बुद्धि लगाई है तुमने – मम्मी ने जोर से हंसते हुये कहा।

मम्मी! मैं सच कह रहा हूँ।–वैभव ने मासूम बनते हुये कहा ।

बेटा! तुम एक ओर से देख रहे हो। परन्तु पशुओं और पक्षियों के भयंकर दुःखों को नहीं और तुम उत्तम मनुष्य गति के जीव होकर तिर्यन्च अर्थात्

जानवर होने की भावना भा रहे हो।

इसमें गलत क्या है मम्मी! – वैभव ने पूछा

तुम जानते हो कि कितने दुःख हैं इन पशु –पक्षियों के। पशुओं को कभी भी भरपेट भोजन नहीं मिलता। रस्सियों में घंटों बंधे रहना पड़ता है। यदि शरीर में कोई दर्द हो तो किसी से कह नहीं सकते। यहाँ तो तुम्हारे जरा से दर्द में तुम डॉक्टर के पास चले जाते हो। बेचारे जानवरों को कोई भी मारता रहता है। भूखे–प्यासे कितना काम करना पड़ता है। ऐसी पर्याय बहुत पाप करने वाले जीवों को मिलती है और तुम उसे प्राप्त करने की भावना कर रहे हो और बंदर जो हमेशा बच्चों और शिकारियों द्वारा सताया जाता है। मदारी उसे बांधकर जगह – जगह उसका खेल दिखाता है। नहीं नाचने पर उसकी पिटाई करता है।

लेकिन मैंने तो ये सोचा नहीं था।– वैभव ने आश्चर्य से कहा ।

और तुम पक्षियों की बात कर रहे थे। मांसाहारी लोग पक्षियों को पकड़कर उनका मांस खा जाते हैं। कई लोग उन्हें अपने शौक के लिये उन्हें पिंजरे में बंद करके रखते हैं और हमें यह मनुष्य पर्याय बहुत पुण्य उदय से मिली है और हमारा महासौभाग्य है कि हमें जैन धर्म और वीतरागी देव–शास्त्र–गुरू का समागम मिला।

हाँ! आप सही कह रही हैं।

और पशु–पक्षी बनने की भावना कभी नहीं करना। ऐसी भावना माना कि हम इस मनुष्य पर्याय में जिनेन्द्र भगवान की सेवा करें। स्वाध्याय करें और अपनी आत्मा को पहिचान कर संसार का अभाव करें।

मैं वादा करता हूँ कि आज से ऐसा ही सोचूँगा। माँ! मैं होमवर्क करने अपने कमरे में जा रहा हूँ।

मेरा अच्छा बेटा।

– विराग शास्त्री

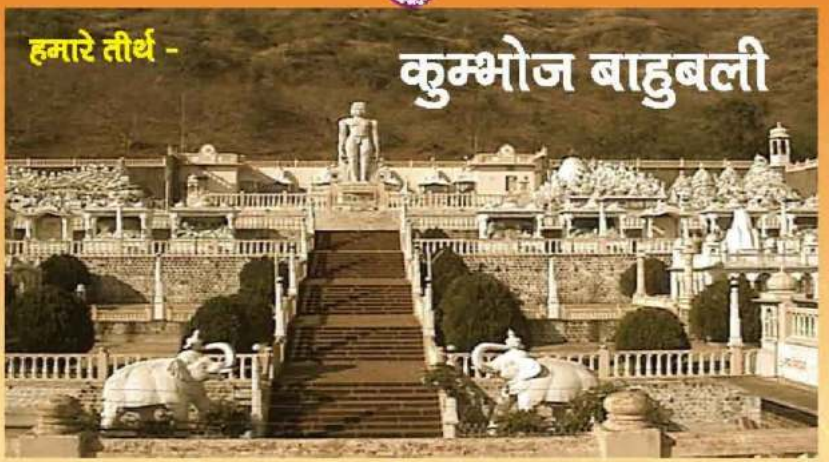


महाराष्ट्र के प्रसिद्ध शहर कोल्हापुर जिले से 30 किमी की दूरी पर स्थित कुम्भोज बाहुबली बहुत प्राचीन अतिशय क्षेत्र और मुनियों की साधना भूमि है। यहाँ लगभग 125 वर्ष पुराना बाहुबली ब्रह्मचर्य आश्रम है। यहाँ से अध्ययन करने के बाद अनेक विद्यार्थी उच्च पदों में कार्य कर रहे हैं और अनेक विद्वान के रूप में समाज में अपनी सेवायें दे रहे हैं। यहाँ एक लौकिक शिक्षा का एक विशाल विद्यालय भी है। यह प्राचीनकाल से ही मुनिराजों की साधना स्थली रही है। यहाँ भगवान बाहुबली की 28 फुट ऊँची विशाल प्रतिमा विराजमान है। साथ ही यहाँ श्री महावीर समवशरण मंदिर, स्वयंभू मंदिर, रत्नत्रय जिनमंदिर, नन्दीश्वर-पंचमेरू मंदिर, मानस्तम्भ, कीर्ति स्तम्भ आदि दर्शनीय हैं। यहाँ एक कुल 66 जिनदर्शन के केन्द्र हैं। पहाड़ पर 4 जिनमंदिर हैं। पहाड़ पर जाने के लिये 386 सीढ़ियाँ हैं। भगवान बाहुबली भगवान के प्रतिमा के साथ तीर्थक्षेत्रों की सुन्दर कृत्रिम रचना अत्यंत मनोहारी है।

यहाँ से कोथली 45 किमी, कुन्थुगिरि 12 किमी, स्तवननिधि 70 किमी की दूरी पर स्थित हैं। यहाँ भोजन और आवास की समुचित व्यवस्था है।

# ग्रीन सिम्बॉल का सच...

## सावधान ! कहीं आप मांसाहार तो नहीं कर रहे ?

सन् 1993 में यूरोपियन कानून की तरह भारत में भी खाद्य पदार्थों को दो भागों में वर्गीकृत करते हुये मांसाहार के पैकेट पर **लाल चिन्ह** एवं शाकाहार के पैकेट पर **हरा चिन्ह** लगाए जाने का कानून बना दिया गया।

किन्तु सच यह है कि सरकारी अधिसूचना में माँसाहार के अंतर्गत -बाल, पंख, सींग, नाखून, चर्बी और अण्डे की जर्दी को बाहर रखा गया है। इसके चलते कम्पनियों ने अपने उत्पादों में इन अशुद्ध पदार्थों का उपयोग कर हरा चिन्ह लगाकर बाजार में बेच रहे हैं।

कम्पनियों के उत्पादों में ये अशुद्ध वस्तुएँ अन्तर्घटक तत्व Additives के रूप में मिलाये गए हैं। इन अन्तर्घटक तत्वों को विभिन्न श्रेणियों में विभाजित किया गया है जैसे- Colouring, Agents, Conservation Agents, Anti-Oxidants, Emulsifiers, Stabilizers and Thickener, Anti-Coagulants, Taste Enhansers, Modified Starches.

अन्तर्घटक तत्वों के नाम काफी बड़े होने के कारण पैकेट पर लिखना असंभव होने से भारत सरकार ने भी यूरोपियन कानून की नकल कर अन्तर्घटक तत्वों के लिये **E-Numbering System** (ENSप्रणाली) को लागू किया है।

- इंटरनेट साइट www.veggieglobals.com पर कौन-कौन से अन्तर्घटक तत्व मांसाहारी हैं कि सूची दी गई है जिसको आपके उपयोग के लिये इस पत्रक में दी गई है।
- साथ ही कंपनियों के हरे चिन्ह वाले खाद्य उत्पादों की सूची और उनमें पड़े E-Numbers की जानकारी दी गई है। जिनको अंदर दी गई सारणी से पता कर सकते हैं कि E-Number का मतलब क्या है।
- इसके अतिरिक्त कुछ कंपनियों के उत्पादों पर E-Numbers नहीं लिखे हैं किन्तु अंतर्घटक तत्वों की केटेगरी के नाम लिखे हैं जिससे यह भ्रम पैदा होता है कि ये अन्तर्घटक तत्व शाकाहार से बने हैं या मांसाहार से। जबकि वह दोनों से बना हो सकता है।

## बाजार के इन खाद्य पदार्थों से बचें

| कंपनी Company | आइटम / उत्पाद Item/ Product | | प्राणी जन्य E नं. Product Source E No. |
|---|---|---|---|
| पारले PARLE | केक जैक | बिस्किट | E-471, E-322, E-481 |
| | हाईजैक | बिस्किट | E-471, E-322, E-481 |
| | पारले जी | बिस्किट | E-471, E-322, E-481 |
| | मुनैको | बिस्किट | E-471, E-322, E-481 |
| | ऑरेंज क्रीम | बिस्किट | E-471, E-322, E-481 |
| | मैरी | बिस्किट | E-471, E-322, E-481 |
| | क्रीम बोरबन | बिस्किट | E-471, E-322, E-481 |
| | किस्मी बार | टॉफी | E-322 |
| | बटर कप | टॉफी | E-322, E-481 |
| | गोल गप्पा | टॉफी | E-471 |
| | फ्रूटी मैंगो | जूस | E-471, E-322, E-481 |
| | पारले 20-20 | बिस्किट | |
| | लेज | चिप्स | E-653 |

| कंपनी Company | आइटम / उत्पाद Item/ Product | | प्राणी जन्य E नं. Product Source E No. |
|---|---|---|---|
| सनफीस्ट Sunfest | स्पेशल बटर कुकीज़ | | E-471, E-322 |
| | स्पेशल चौको क्रीम | | E-322 |
| | सनफीस्ट | बिस्किट | E-471, E-322, E-481 |
| | स्पेशल | बिस्किट | E-322 |
| | स्नैकी जिगजैग | बिस्किट | E-471, E-481 |
| | सनफीस्ट ग्लूकोज | बिस्किट | E-322 |
| कैडबरी Cadbury | 5 स्टार | चॉकलेट | E-471, E-476, E-442 |
| | डेरी मिल्क | चॉकलेट | E-476 |
| | वॉर्न वीटा मिल्क पावडर | | E-471, E-322 |
| | इकलेयर्स | टॉफी | E-471, E-476 |
| | मिल्क ट्रीट | टॉफी | E-422, E-476 |
| | जेम्स | टॉफी | E-476 |
| नेसले Nastle | मिल्क चॉकलेट | चॉकलेट | E-471, E-476 |
| | मैगी नूडल्स | नूडल्स | E-631, E-627 |
| | मैगी नेसले बोरबन | बिस्किट | E-471 |
| प्रिया गोल्ड Priyagold | क्लासिक क्रीम | बिस्किट | E-471, E-322, E-481 |
| | सी.एन.सी. | बिस्किट | E-471, E-322, E-481 |
| | स्नैक्स जिग जैग | बिस्किट | E-471, E-322, E-481 |
| रिगली Wriegly | सेंटर फ्रेश | | E-471, E-422, |
| न्यूट्रीन Nutrine | महालेक्ट्रो | | E-322 |
| | जेम्स | | E-322, E-476 |
| कैण्डीमैंन Candyman | इक्लेयर्स | टॉफी | E-471, E-322 |
| | टॉफी चॉकलेट | टॉफी | E-471, E-322, E-476 |
| मिन्टो Minto | गोल मिंट | टॉफी | E-904, E-322 |
| पेरीज़ Parry's | कॉफी बाईट | टॉफी | E-471, E-322 |
| बिन्गो Bingo | टोमैटो चिप्स | चिप्स | E-631, E-627 |
| ब्रिटेनिया Britania | 50-50 | बिस्किट | E-472, E-481, |
| | जिम- जैम | बिस्किट | E-471, E-481, E-322 |
| | गुड डे | बिस्किट | E-471, E-322 |
| | नाइस टाइम | | E-471, E-481, E-322 |
| आई. टी. सी. I.T.C. | स्पाइसी टेस्टी ऑरेंज | | E-322 |
| | रिच कैश | बिस्किट | E-471, E-481 |
| | चॉको क्रीम | बिस्किट | E-322 |
| कैम्पी फ्रूटस Campy Fruits | चॉको टैडी | | E-476, E-322 |
| परफेटी Parfeati | हेप्पीडेन्ट | च्यूइंगम | E-422, E-322 |

| ई नम्बर E.NO. | ई नम्बर का नाम Full Name of E | श्रेणी Category | उत्पादन स्रोत Source of Product | दुष्प्रभाव Side effect |
|---|---|---|---|---|
| E-120 | कॉचनील/ कारमिनिक एसिड Cochinsal, Caminic Adic | लाल रंग (Red Colour) खाद्य वस्तुओं को रंगने में उपयोग Colour Use in Food Product In Coloring | प्राणी जन्य स्रोत Animal Origin | बच्चों में अति सक्रियता Harmful of Children's |
| E-153 | कार्बन ब्लैक/ चारकोल Carbon Black / Vegetable Corbons | कत्था / काला रंग Moroon / Black Colour खाद्य वस्तुओं में उपयोग Use in Food Product | प्राणी जन्य स्रोत Animal Origin | बच्चों को हानिकारक/ प्रतिरोधक शक्ति में कमी Harmful of Children's Allergies or Intoerances |
| E-161G | कैन्थाजेन्थिन Canthaxanthin | कलर- नारंगी Orange Colour खाद्य वस्तुओं में उपयोग Use in Food Product | मछली एवं पानी में हड्डी वाले जानवर Fish & Invertebrates with Hard Shells. | स्वास्थ्य के लिये हानिकारक Harmful for Health |
| E-252 | पोटेशियम नाइट्रेट Potassium Nitrate | आयोडीन रहित नमक पिकलिंग साल्ट Piking Salt | प्राणी जन्य स्रोत Animal Origin | सिरदर्द/ आँत में खराबी / त्वचा रोग Headic / Skin Dicease |
| E-322 | लेसिथिन Lecithins | इमल्सीफायर व स्टेबलाइजर खाद्य पदार्थों के रंगों को स्थायित्व एवं आईसक्रीम को जल्दी पिघलने से बचाने के लिये उपयोग | अण्डा/ जानवरों में पाई जाने वाली चर्बी Egg/ Animal Fat अण्डे की जर्दी एवं पानी को मलाईदार बनाने के लिये | |

| ई नम्बर<br>E.NO. | ई नम्बर का नाम<br>Full Name of E | श्रेणी<br>Category | उत्पादन स्रोत<br>Source of Product | दुष्प्रभाव<br>Side effect |
|---|---|---|---|---|
| E-476 | पॉलीग्लायसरॉल पॉलीरीसाइनोलीट<br>Polyglyceral Polyricinoleate | इमल्सीफायर एण्ड स्टेबलाइजर्स<br>Emulsifier & Stabilizer | प्राणी जन्य स्रोत<br>Animal Origin | |
| E-477 | प्रोपेन- 1,2 डायोल एस्टरस ऑफ फेटी एसिड्स<br>Propane-1,2 Diol esters of Fatty acids | इमल्सीफायर एण्ड स्टेबलाइजर्स<br>Emulsifier & Stabilizers | प्राणी जन्य स्रोत<br>Animal Origin | |
| E-478 | लेक्टीलेटेड फेटी एसिड एस्टर्स<br>ऑफ ग्लायसरॉल एण्ड प्रोपेन 1-2, डायोल<br>Lactylated Fatty acid esters<br>of glycerol and Propane-1 | इमल्सीफायर<br>स्टेबलाइजर्स<br>Emulsifier & Stabilizers | प्राणी जन्य स्रोत<br>Animal Origin | |
| E-479 B | थर्मली ऑक्सीडाइज्ड सोयाबीन ऑयल एण्ड<br>डिग्लिसराइड्स ऑफ फेटी एसिड्स<br>Thermally oxidixed soyabean<br>oil and diglyceriders of fatty acids | इमल्सीफायर / स्टेबलाइजर्स<br>Emulsifier & Stablizers | प्राणी जन्य स्रोत<br>Animal Origin | |
| E-481 | सोडियम स्टीरियॉल -2 लेक्टीलेट<br>Sodium Stearoyl-2 Lactylate | इमल्सीफायर स्टेबलाइजर्स<br>खाद्य पदार्थों को स्पंज बनाने के लिये | प्राणी जन्य स्रोत<br>Animal Origin | |
| E-483 | स्टीरियल टॉर्ट्रेट<br>Stearoyl Tartrate | इमल्सीफायर / स्टेबलाइजर्स<br>Emulsifier & Stabilizers | प्राणी जन्य स्रोत<br>Animal Origin | |
| E-542 | बोन फॉस्फेट (खाने योग्य हड्डी) का पावडर<br>Bone Phosphate | एन्टीकेकिंग एजेन्ट<br>Anti Caking Agent | प्राणी जन्य स्रोत<br>Animal Origin | |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| E-422 | ग्लॉयसरॉल<br>Glycerol | एल्कोहल/ मदिरा<br>Alcohal | प्राणी जन्य स्रोत | |
| E-441 | जिलेटिन<br>Gelatine | इमलसीफायर स्टेबलाइजर<br>Emulsifier and Stabilizer<br>अण्डा की जर्दी एवं पानी को मलाईदार बनाने के लिये | प्राणी जन्य स्रोत<br>Animal Origin | |
| E-442 | अमोनियम फॉस्फेटाइड्स<br>Ammonium Phosphatides | इमल्सीफायर – ऊँचे तापमान में रंग न छूटे इसके लिये उपयोग | जानवरों में पाईजाने वाली चर्बी / Animal Fat | |
| E-4704 | सोडियम, पोटेशियम एण्ड कैल्शियम सॉल्ट्स ऑफ फेटी एसिड<br>Sodium Potassium and Calcium Salts of Fatty Acids | इमल्सीफॉयर / एन्टीकेकिंग एजेंट<br>Emulsifier/ Anti-Caking Agent | प्राणी जन्य स्रोत<br>Animal Fat | |
| E-470 B | मेग्नीशियम स्टियरेट ऑफ फेटी एसिड्स<br>Magnesium Stearate of Fatty Acids | इमल्सीफॉयर/ एन्टीकेकिंग एजेंट<br>Emulsifier/ Anti Caking Agent | प्राणी जन्य स्रोत<br>Animal Origin | |
| E-471 | मोनो एण्ड डिग्लिसराइड्स ऑफ फेटी एसिड<br>Mono & Diglycerides of Fatty Acids | इमल्सीफायर / Emulsifier<br>खाद्य पदार्थों में स्पंज बनाने एवं ज्यादा समय तक रखने के लिये | प्राणी जन्य स्रोत<br>Animal Origin | |
| E-472-A-F | मोनो एण्ड डायऐसिटाइलटारटेरिक एसिड के परिवार के E-472-, A-F इमल्सीफायर<br>Mono & Diglycerides of Fatty Acid Family E-472, A-F Emulsifier | इमल्सीफायर<br>Emulsifier | प्राणी जन्य स्रोत<br>Animal Origin | |
| E-475 | पॉलीग्लाइसरॉल एस्टर ऑफ फेटी एसिड<br>Polyglycerol esters of Fatty Acids | इमल्सीफायर एण्ड स्टेबलाइजर्स<br>Emulsifier and Stabilizer | प्राणी जन्य स्रोत<br>Animal Origin | |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| E-572 | मेग्नीशियम स्टीयरेट<br>Magnesium Stearate | इमल्सीफॉयर / एन्टी केकिंग एजेंट<br>Emulsifier/ Anti Caking Agent | प्राणी जन्य स्रोत<br>Animal Origin | |
| E-631 | डीसोडियम इनोसीनेट<br>Disodium Inosinate | फ्लेवर इन्हेंसर स्वाद बढ़ाने वाला<br>Flavour Enhancer | प्राणी जन्य स्रोत<br>Animal Origin | |
| E-635 | डीसोडियम 5<br>राइबोन्यूक्लियोटाइड<br>Disodium 5 ribonucleotides 5 | फ्लेवर इन्हेंसर<br>स्वाद बढ़ाने वाला<br>Flavour Enhancer | प्राणी जन्य स्रोत<br><br>Animal Origin | |
| E-640 | ग्लॉयसाइन और इसका सॉल्ट सोडियम<br>Glycine and its Sodium | फ्लेवर इन्हेंसर स्वाद बढ़ाने वाला<br>Flavour Enhancer | प्राणी जन्य स्रोत<br>Animal Origin | |
| E-901 | बीजवेक्स (मधुमोम)<br><br>Beeswax-white and yellow | ग्लेजिंग एजेन्ट / खाने योग्य पदार्थों को चमकाने वाली चीज़<br>Glazing Agent | प्राणी जन्य स्रोत<br><br>Animal Origin | |
| E-904 | शैलैक<br><br><br>Shellac | ग्लेजिंग एजेंट<br>खाने योग्य पदार्थों<br>को चमकाने वाली चीज़<br>Glazing Agent | प्राणी जन्य स्रोत<br><br><br>Animal Origin | |
| E-910 | एल-सिस्टीन<br>L-Cysteine | इम्प्रूविंग एजेंट<br>Improving Agent | प्राणी जन्य स्रोत<br>Animal Origin | |
| E-920 | एल-सिस्टाइन हाइड्रोक्लोराइड<br>L-Cysteine Hydrochloride | इम्प्रूविंग एजेंट<br>Improving Agent | प्राणी जन्य स्रोत<br>Animal Origin | |
| E-921 | एल- सिस्टाइन हाइड्रोक्लोराइड मोनोहाइड्रेट<br>L-Cysteine Hydrochloride Monohydrate | इम्प्रूविंग एजेंट<br><br>Improving Agent | प्राणी जन्य स्रोत<br><br>Animal Origin | |

# मौर्य सम्राट और जैन धर्म

**चन्द्रगुप्त** - मौर्य सम्राट चन्द्रगुप्त जैन थे। इनके समय में मगध में 12 वर्ष का अकाल पड़ा था। उस समय वे अपने पुत्र को राज्य सौंपकर अपने धर्मगुरु जैनाचार्य भद्रबाहु के साथ दक्षिण की ओर चले गये थे और तपस्या करते हुये बारह वर्ष पश्चात् चन्द्रगिरि पर्वत उनका स्वर्गवास हुआ था।

**सम्राट अशोक** - सम्राट अशोक चन्द्रगुप्त मौर्य का पौत्र था। जैन ग्रन्थों में इनके जैन होने के प्रमाण मिले हैं। कुछ विद्वानों का मानना है कि अशोक पहले जैन था बाद में बौद्ध हो गया। इसका प्रमाण यह है कि अशोक के लेखों में बौद्ध होने का कोई प्रमाण नहीं है बल्कि जैन धर्म के भावों की अधिकता है। सम्राट अशोक ने राज्य करने के 12 वर्ष तक स्वयं के बौद्ध होने की सूचना नहीं दी। उसने कई शिलालेखों में स्वयं को जैन सम्राट घोषित किया है।

**सम्प्रति** - सम्प्रति अशोक का पौत्र था। इसे जैन आचार्य सुहस्ति ने उज्जैन में जैनधर्म की दीक्षा दी थी। उसके बाद सम्प्रति ने जैन धर्म का बहुत प्रचार किया। विदेशों में भी जैन धर्म के प्रचार करने वाले व्यक्ति भेजे।

**कलिंग में जैन धर्म** - ईसा के पूर्व दूसरी सदी में ब्राह्मण, बौद्ध और जैन धर्म चल रहे थे। उस समय जैन धर्म राजधर्म के रूप में स्थापित था। उड़ीसा में भगवान महावीर के निर्वाण के 100 वर्ष बाद राजा नन्दवर्धन के समय राज्य का राजधर्म जैन धर्म हो गया था। ई.सं. 629 में चीनी यात्री युआन चुआंग ने वैशाली, राजगृही, नालंदा और पुण्यवर्द्धन में अनेक निर्ग्रन्थ साधुओं को देखा था।

**महाप्रतापी राज खारवेल** - जैन धर्म के सर्वाधिक महाप्रतापी राजाओं में राजा खारवेल का नाम भी आता है। सम्राट खारवेल ने अनेक जिनमंदिरों का निर्माण करवाया था। खारवेल चेदिवंश का था। उसने यूनानी राजा देमेत्रियस को जीतते हुये पाटलीपुत्र का राज्य विस्तार कर लिया था। उड़ीसा के भुवनेश्वर के पास प्राकृत भाषा में एक लेख में उसने स्वयं के जैन होने का उल्लेख किया है।

– आचार्य विद्यानन्द महाराज

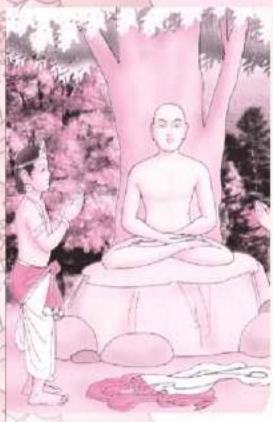

# मुनिवर का उपदेश
## और
# Jkod dh lk/kuk

एक विशाल नगर में परम दिगम्बर मुनिराज पद्मनन्दि पधारे। सारे नगर के साधर्मी उनके दर्शन करने गये। सभी लोग उनके दर्शन करके चले गये परन्तु एक व्यक्ति उनकी शांत मुद्रा को देखता हुआ वहीं बैठा रहा और मुनिराज के आंखे खोलने की प्रतीक्षा करता रहा। बहुत देर बाद जब मुनिराज ने आखें खोलीं तो उस व्यक्ति ने अत्यंत भक्ति भाव से नमस्कार किया और बोला कि हे स्वामी! आज आपकी मुद्रा देखकर पहली बार इतनी शांति का अनुभव हुआ है। मेरा व्यापार बहुत बड़ा है और मेरे पास किसी भी वस्तु की कोई कमी नहीं है। परन्तु आज तक मुझे शांति नहीं मिली। इसका क्या कारण है ?

मुनिराज ने शांत भाव से उत्तर दिया – हे भव्य! संसार के भोग–विलास से कभी शांति नहीं मिल सकती। ये तो पाप का ही कारण हैं।

तो मुनिवर! मुझे क्या करना चाहिये ?– उस व्यक्ति ने विनम्र भाव से पूछा।

मुनि पद्मनंदि बोले – सुनो भव्य! ये मनुष्य पर्याय बहुत दुर्लभता से मिली है। उसमें भी जैन कुल मिलना तो महादुर्लभ है। अतः आत्म हित ही करना सबसे पहला कार्य है और छः आवश्यक प्रतिदिन करना श्रावक का कर्तव्य है।

मुनिवर! ये छःआवश्यक क्या हैं ?– व्यक्ति फिर पूछा

मुनिवर बोले – छःआवश्यक अर्थात् छः कार्य प्रतिदिन अवश्य करना चाहिये। ये छः आवश्यक हैं –

देवपूजा गुरूपास्तिः स्वाध्याय संयमस्तपः।
दानञ्चेति गृहस्थानां, षट्कर्माणि दिने–दिने।।

व्यक्ति ने भोलेपन से कहा – गुरुवर! मैं तो अल्पज्ञानी हूँ, जरा विस्तार से बतायेंगे तो आपकी बड़ी कृपा होगी।

पद्मनंदि मुनिराज बोले – पहला आवश्यक कार्य प्रतिदिन मन–वचन–काय की शुद्धिपूर्वक वीतरागी जिनवर अरहंत प्रभु का दर्शन करना चाहिये।

दूसरा आवश्यक कार्य मोक्षमार्गी मुनिराजों और ज्ञानी धर्मात्माओं की सेवा और बहुमान करना चाहिये। उनको प्रतिदिन याद करके उनको नमन करना चाहिये।

तीसरा आवश्यक कार्य आत्मा और मोक्षमार्गी महापुरुषों का स्वरूप बताने वाली जिनवाणी का प्रतिदिन स्वाध्याय करना चाहिये, साधर्मियों से चर्चा करना चाहिये।

चौथा आवश्यक कार्य संयम है। श्रावक को आलू – प्याज आदि जमींकंद का त्याग करना चाहिये। अपने व्यापार और गृहस्थी के कार्यों में हिंसा से बचने का प्रयास करना चाहिये।

पांचवाँ आवश्यक कार्य है तप। जितना हो सके व्रत, उपवास, नियम द्वारा अपना जीवन पवित्र बनाना चाहिये।

छठवाँ आवश्यक कार्य दान। श्रावक को न्याय से कमाये हुये धन में से कुछ धन का उपयोग जिनधर्म की प्रभावना में खर्च करना चाहिये। मुनिराजों और साधर्मियों को भोजन कराना, जिनवाणी का प्रकाशन कराना, जिनवाणी भेंट देना, किसी प्राणी के जीवों को बचाना, किसी बीमार मुनि, ज्ञानी, साधर्मी के इलाज के लिये अपना योगदान देना दान के अंतर्गत आता है।

मुनिराज की मंगल देशना सुनकर वह व्यक्ति अत्यंत प्रमोद भाव से बोला – वाह मुनिवर! आपने मेरे जीवन को पवित्र करने के लिये जो छः आवश्यक बताये हैं मैं अभी से उनके पालन का नियम लेता हूँ।

मुनिराज ने धर्मवृद्धि का आशीर्वाद दिया।

वह श्रावक हो गया और उसने अपना जीवन बहुत महान बना लिया। उसने सम्यग्दर्शन प्राप्त किया। वह जीव बहुत जल्दी ही मोक्ष पद को प्राप्त करेगा। हमें भी प्रतिदिन छः आवश्यक का पालन करना चाहिये।

# गाते-गाते

जब कषाय हो जाये आउट ऑफ कंट्रोल, तत्वज्ञान में रम के बोल
तत्वज्ञान में रम के बोल, समयसार को पढ़ के बोल जैन धर्म इज वेल
यह जीव क्या जाने क्या उसका भव क्या होगा ?
मोक्ष मिलेगा या निगोद में टाई होगा !
आतम में रम, चेतन की धुन, संयम भाव को रखके बोल
भैया जैन धर्म इज वेल

जो राग द्वेष को प्लस कर दे, उसे स्टार प्लस कहते हैं।
जो मोह का बेलेन्स बढ़ा दे उसे मोबाइल कहते हैं।
जो चित्त को चलायमान कर दे उसे चल चित्र कहते हैं।
जो आदमी को खच्चर (गधा) बना दे उसे पिक्चर कहते हैं।
जिसकी लगन पशु को भी परमात्मा बना दे,
उसे भगवान आत्मा कहते हैं।

– दीप्ति अनन्त जैन, विक्रोली, मुम्बई

## WATCH YOUR WATCH

| | |
|---|---|
| **Watch your Words** | – अपनी वाणी पर संयम रखें |
| **Watch your Action** | – अपने कर्मों पर नजर रखें। |
| **Watch your Thought** | – अपने विचारों पर दृष्टि रखें। |
| **Watch your Character** | – अपने चारित्र को सही रखें। |
| **Watch your Heart** | – अपने मन पर नियंत्रण रखें। |

– डॉ. नवनीत काला

पेज नं.20 परछाईयों पहचानियें के सही उत्तर

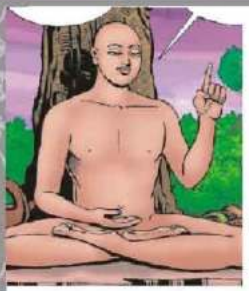

# महाबली कौन

कामदेव के पास सारे संसार को वश में करने की अद्भुत ताकत थी। संसार के अनेक वीर, प्रतापी, राजा, महाराजा से लेकर सामान्य व्यक्ति उसके आधीन थे। कामदेव की पत्नी रति को अपने पति की शक्ति का बहुत घमंड था। एक बार कामदेव अपनी पत्नी के साथ विहार कर रहे थे। वहीं जंगल में एक नग्न दिगम्बर मुनिराज अपनी आत्म साधना में लीन थे। दोनों ने मुनिराज को देखा। मुनिराज की ओर संकेत करते हुये

रति ने पूछा कि हे नाथ! ये कौन हैं ? कामदेव ने उत्तर दिया – ये जिन हैं।

रति ने फिर पूछा कि क्या ये आपके वश में हैं ?

कामदेव ने संकोच से कहा – हूं हूं।

रति ने कुछ नाराज होते हुये कहा – हूं हूं का क्या मतलब होता है? मुझे साफ-साफ बताइये कि ये आपके वश में हैं या नहीं ?

कामदेव ने अपनी आंखें नीचे करते हुये कहा कि नहीं! ये मेरे वश में नहीं हैं।

तब रति ने हंसते हुये कहा कि तुम तो बहुत बड़ी-बड़ी बातें करते थे कि सब मेरे वश में रहते हैं, कोई ऐसा नहीं जो मेरे वश में नहीं हो। आज तुम्हारी बात झूठ सिद्ध हो रही है।

कामदेव ने कहा – ऐसी बात नहीं है प्रिये! ये तो बड़े प्रतापी हैं, इनका कोई मुकाबला नहीं कर सकता। बस ये ही मेरे आधीन नहीं हैं।

रति ने धिक्कारते हुये कहा – धिक्कार है आपको। आप तो नाम के

वीर हो। आपसे अधिक वीर तो ये नग्न व्यक्ति है। जब आप इसे नहीं जीत सकते तो आपको वीर कैसे कहा जा सकता है? स्वयं की प्रशंसा करने से कोई लाभ नहीं है।

कामदेव रति के तीखे वचन सुनकर चुप हो गया। फिर भी अपनी समस्या बताते हुये कहा – यह बात नहीं प्रिये! तुम तो जानती हो हमारे राजा मोह हैं.....

हाँ! मुझे पता है तो क्या..... – रति ने कामदेव की बात काटते हुये कहा।

जो यह नग्न व्यक्ति बैठा है, इसने हमारे राजा मोह को जीत लिया है। फिर हमारी ताकत इनके सामने कैसे काम कर सकती है? हम तो राजा मोह के नौकर हैं। जब राजा ने ही इनके सामने हार मान ली तो हमारी क्या हिम्मत? – कामदेव ने डरते हुये उत्तर दिया।

रति ने मुनिराज का नग्न रूप देखकर कहा – इन्हें लज्जा नहीं आती। कम से कम इन्हें लंगोट तो पहनना ही चाहिये।

कामदेव ने शांत भाव से उत्तर दिया – नग्नता ही इनका सर्वोत्तम आभूषण है। नग्न रहना बेशर्मी की नहीं वीतराग परिणाम की निशानी है बल्कि जिन्हें लज्जा होती है, मन में विकारी परिणाम होते हैं, कषाय होती है वे वस्त्र पहनते हैं। इनके मन में तो कषाय का स्थान नहीं है तो शरीर पर वस्त्र कैसे हो सकते हैं। ये तो अंतर और बाहर दोनों से नग्न हैं। बड़े-बड़े सूरमा, महाबली और महात्मागण भी कामदेव के सामने हार मान लेते हैं। धन्य हैं ये नग्न साधु और इनका पवित्र जीवन-जिन्हें विश्व की कोई ताकत इनकी साधना से नहीं डिगा सकती।

रति ने यह सुनकर मुनिराज को प्रणाम किया और कहा – हे मोह और काम जैसे महाशत्रु को जीतने वाले पवित्र आत्मा! आपके दर्शन करके हमारा जीवन धन्य हो गया।

# भक्तामर स्त्रोत

भक्तामर स्त्रोत के चौबीस छंदों का हिन्दी एवं अंग्रेजी अनुवाद आप पहले के अंकों में पढ़ चुके है अब आगे ...

## 25

तू ही बुद्ध देव – गण पूजित, निर्मल ज्ञान का धारी।
तू ही शंकर त्रिभुवन में है, एक मात्र मंगलकारी।
ब्रह्मा तूहि विधान किया है, मोक्ष मार्ग का है सुखमूल।
व्यक्त प्रभु,पुरुषोत्तम तू है, मस्तक धारूँ चरणन धूल।।

Budh; because thouart Omniscient,
'Shankar', world's benefactor,
Created path to salvation,
Hance creator, Greatest one.

## 26

तीन लोक के दुःख मेटन हारे, वन्दू तव पद हे सुख धाम।
पृथ्वी के निर्मल श्रृंगारे, बन्धु तव पद हे अभिराम।
तीन लोक के पावन हारे, वन्दू तव पद सुबह और शाम।
भव जल पार उतारनहारे, वन्दू तव पद हे निष्काम।।

Homage to world's distress- kille,
Homage to world's ornament.
Homage to world's benefactor,
And the guide to solvation.

## 27

आश्चर्य नहीं, सदगुण सारे जो थे आश्रयहीन उदास।
तेरे आश्रित हो गये जिनवर, पूर्ण भयी सब उनकी आश।
स्वप्न में भी न दोष निहारे, मुख सरसी रूह लेना नाथ।
निःसन्देह हुये सब गर्वित, विबुधाश्रय पाकर तुम नाथ।

No wonder, if good attributes,
In despair, came to thee,
No vice, proud of the other gods,
Came to thee even in dream.

28

अनुपम दृश्य कैसा मनोहर ऊँचा वृक्ष अशोक महान।
उसके नीचे शोभित है शुचितन, तेरा अतिशय भगवान।
मानो घनमाला तटवर्ती होवे सूर्य विशाल किरण।
अपनी ज्योति से करता हो, क्षण में तम से हीन गगन।

Thou art under "Ashok".
In resplendent Purity.
Asif sun on the edge of of clouds,
Were illuminating sky.

29

स्फटिक का है सिंहासन जिसकी सुन्दरता सुविचित्र।
और विराजित हे गुण सागर, तेरी कंचन देह पवित्र।
मानो रत्न जटित उदयगिरि की चोटी पर, हे परमेश।
प्रखर ज्योति को ज्वलित बिम्ब से बरसाये तम हारि दिनेश।

Thy golden body occupies,
Throne, studded with jawels,
As if on ornamented hill,
The brightsun – rays are falling.

30

कनक देह तेरी अति सुन्दर, ढुरते जिस पर शुभ्र चंवर।
भक्तजनों के मन को मोहे, दुःख संताप को लेवे हर।
देख कल्पना होती ऐसी ज्यों सुमेर से गिरता हो।
नीर का झरना झर झर झर, अरु चन्द्र ज्योतिसा झरता हो।।

Silver whisk mover thy head,
And body sparkls like gold,
It seems that a stream from sumer,
Falling, moon – light generates.

शेष अगले अंक में...

# सच बोलेंगे

बच्चे खेल रहे थे खेल, रामू ने फेंकी थी गेंद।
दूध गिरा, मम्मी चिल्लाई, किसने फेंकी, आफत आई।
बच्चे लगे कांपने थर थर, रामू बोला तब सच सच।
सच सुनकर माँ हरषाई, गोद उठा अति ही मुसकाई।
बच्चे बोले ' सच बोलेंगे', अब तो हम भी सच बोलेंगे।
सच बोलेंगे, सच बोलेंगे, झूठ कभी भी न बोलेंगे।

## संस्था की योजनाओं में आपका आर्थिक सहयोग सादर आमंत्रित है।

| | |
|---|---|
| शिरोमणि परम संरक्षक | – 1 लाख रूपये |
| परम संरक्षक | – 51 हजार रूपये |
| संरक्षक | – 31 हजार रूपये |
| परम सहायक | – 21 हजार रूपये |
| सहायक | – 11 हजार रूपये |
| सहायक सदस्य | – 5 हजार रूपये |
| सदस्य | – 1000/– |

प्रत्येक सहयोगी को (सदस्य को छोड़कर ) चहकती चेतना पत्रिका का आजीवन सदस्य बनाया जायेगा। संस्था द्वारा तैयार होने वाली समस्त सी.डी. और प्रकाशन आपको निःशुल्क भेजा जायेगा। आप अपनी सहयोग राशि आचार्य कुन्दकुन्द सर्वोदय फाउन्डेशन रजि.जबलपुर के नाम से चैक अथवा ड्राफ्ट के माध्यम से बनाकर भेजें। आप सहयोग राशि हमारी संस्था के पंजाब नेशनल बैंक, फुहारा चौक, जबलपुर के बचत खाता कमांक **1937000101026079** में जमा करा सकते हैं।

पाठकगण ध्यान दें

चहकती चेतना के सम्बन्धित कार्यों के लिये इस पते पर संपर्क करें।

**चहकती चेतना, संपादक**
सर्वोदय, 702, जैन टेलीकॉम, फूटाताल, लाल स्कूल के पास,
जबलपुर 482002 म.प्र. मो. 9300642434
Chehaktichetna@yahoo.com, Kahansandesh@gmail.com

मृदुमति चोर अपने साथियों के साथ...
साथियों बहुत दिन हो गये हमें चोरी करते मोटा माल हाथ नहीं लगा। आज हम चोरी करने के लिये राजमहल में चलेंगे। महल के अन्दर मैं जाऊंगा आप लोग बाहर सावधान रहना।
NksVk lk vi
जैसी आपकी आज्ञा।
राजमहल में...
प्रिये! आज मैंने मुनिराज से धर्मोपदेश सुना, मुझे तो अब संसार, शरीर, भोगों से डर लगने लगा है अब तो मैं निश्चित रूप से मुनि दीक्षा लूंगा ही।
नाथ! मेरा क्या होगा, कुछ तो सोचो!
हूँ! यह राजा तो अपना सब राज-पाट छोड़कर मुनिव्रत धारण करने का विचार कर रहे हैं और मैं - मैं कितना पापी हूं चोरी करके पेट पालता हूं, मुझे धिक्कार है! क्यों न मैं इस पाप के धन्धे को छोड़ दूं, आत्मकल्याण का मार्ग पकड़ूं! बस ठीक है, मेरा दृढ़ निश्चय है कि कल प्रातः ही मैं मुनि दीक्षा अवश्य ले लूंगा।

और मृदुमति बन गये दिगम्बर मुनि एक दिन आहार के लिये आ रहे थे....
अहो, हमारे नगर का अहोभाग्य जो ऐसे तपस्वी मुनिराज चारणऋद्धि धारी मुनिराज आहार के लिये हमारे नगर में आ रहे हैं।
धन्य है ये ऋषिराज देखो चार माह से उपवास से थे। वह जो सामने पर्वत है, वहीं पर ठहरे थे। नगर में अब तक ये आये ही नहीं, आज आहार के लिये उठे हैं। वह बड़ा भागी होगा जिसके यहां इनका आहार होगा।
ये लोग किसकी प्रशंसा कर रहे हैं। न तो मैं चारणऋद्धी धारी हूं और न मैं चार माह का उपवासी। हां सुना था कि पास के पर्वत पर ऐसे एक ऋषिराज ने चातुर्मास किया था। हो सकता है वे यहां से चले गये हों। परन्तु ये लोग तो मुझे वही ऋषिराज समझ कर मेरी इतनी प्रशंसा कर रहे हैं। मैं चुप रह जाऊं तो क्या हर्ज है।

बस तनिक सी मायाचारी आ गई मन में और चुप रह गये मुनिराज। न गुरूजी से प्रायश्चित लिया— मायाचारी का परिणाम रंग लाये बिना नहीं रहा। तपस्या बहुत की थी। इसलिये मरण करके पहुंचे छठे स्वर्ग में—

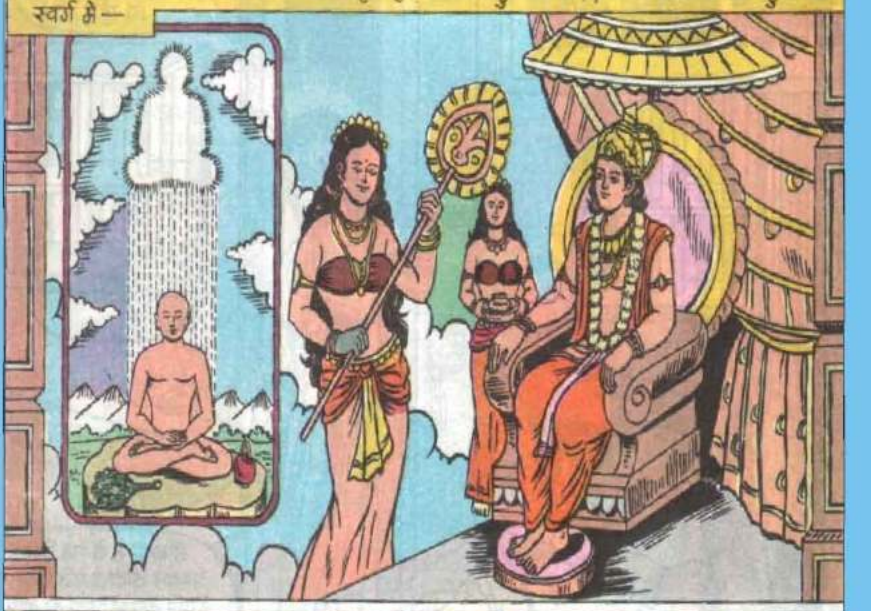

परन्तु देवपर्याय पूरी करके आना पड़ा **तिर्यन्च** पर्याय में...

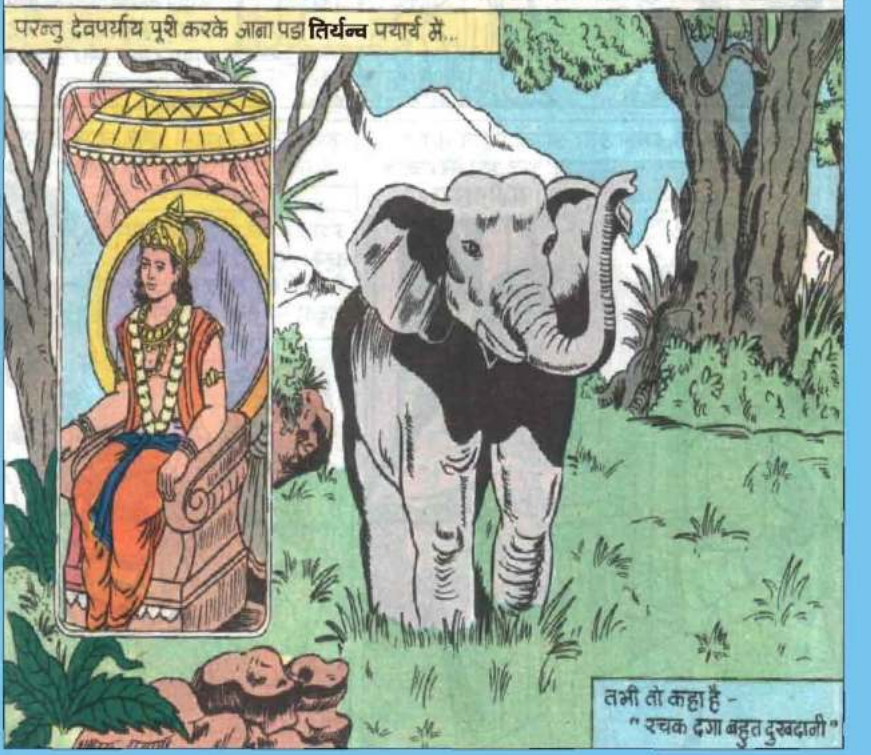

तभी तो कहा है -
" रचक दगा बहुत दुखदानी "

# ये परछाईयाँ किनकी है और ये किन तीर्थंकरों के चिन्ह है




इनके उत्तर इसी अंक में दिये गये है

# भगवान, मुनिराज, श्रावक, सिद्ध की सही जोड़ी के धागे उलझ गये हैं क्या आप ढूंढ पायेंगे

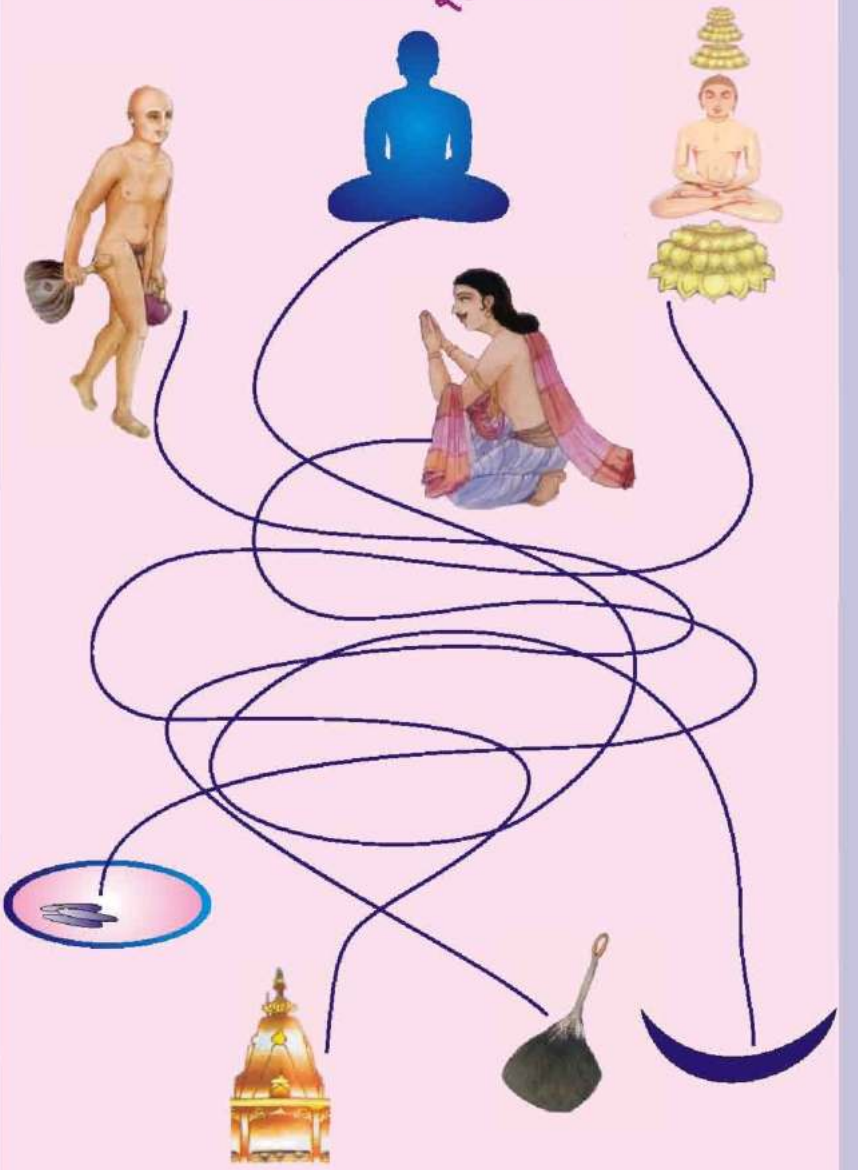

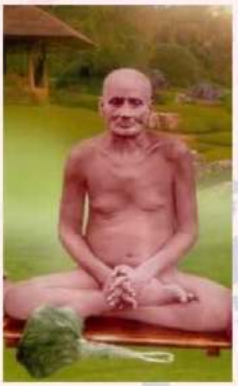

# दिगम्बरत्व की महिमा

बीसवीं सदी के प्रथम आचार्य शांतिसागर महाराज संघ सहित दक्षिण भारत में विहार कर रहे थे। वे हैदराबाद के पास में एक छोटे नगर में थे। उस समय हैदराबाद में एक मुस्लिम निजाम (राजा) का शासन था और निजाम के आदेश के अनुसार नग्न जैन मुनिराजों का प्रवेश मना था। आज्ञा नहीं मानने पर कड़ी सजा दिये जाने का नियम था। आचार्य शांतिसागरजी ने दूसरे दिन हैदराबाद की ओर विहार करना प्रारंभ किया तो अनेक लोगों ने उन्हें हैदराबाद जाने से रोका और निजाम की आज्ञा की जानकारी दी। भक्त नहीं चाहते थे कि महाराज पर किसी तरह को कोई संकट आये। परंतु दृढ़ निश्चय वाले आचार्य ने अपना निर्णय नहीं बदला। वे विहार करते हुये हैदराबाद के महल के सामने से निकल रहे थे तो निजाम की बेगम को जानकारी मिली कि एक नग्न साधु महल के सामने से निकल रहे हैं। उन्हें आश्चर्य हुआ कि कोई व्यक्ति इतना तप भी कर सकता है। उन्होंने महल की खिड़की से देखा तो महाराज को देखकर उनका मन श्रद्धा से भर गया। वे अपने आपको नहीं रोक सकीं और भागते हुये महल के बाहर आईं और चेहरे से नकाब अलग करके मुनिराज के चरणों में गिरकर उन्हें नमन किया। मुस्लिम परम्परा में महिलाओं को नकाब पहनना अनिवार्य है। यह आश्चर्यजनक घटना सुनकर निजाम वहाँ आया और जैन मुनि की साधना और तपस्या का रूप देखकर महाराज के चरणों में नमन किया और आदेश दिया कि भविष्य में किसी भी जैन मुनि के राज्य में आगमन पर उन्हें राज्य के विशेष अतिथि के रूप में सम्मान दिया जाये।

यह था दिगम्बरत्व का चमत्कार।

# सब्जी बेचने वाली ने दिया ढ़ाई करोड़ दान

महानता जन्म से नहीं कर्म से आती है। धनवान होना कोई बड़ी बात नहीं। बड़ी बात तो यह है कि वह अपने विशाल धन का उपयोग कैसे करता है ?

ताइवान की मिस चेन सू चू एक सामान्य सब्जी विक्रेता हैं। विश्व प्रसिद्ध पत्रिका टाइम ने विश्व के सर्वश्रेष्ठ सामाजिक कार्य करने वाले 100 व्यक्तियों की सूची में, रिडर्स डाइजेस्ट ने 'एशियन ऑफ द ईयर', फोर्स पत्रिका ने उसे एशिया पेसिफिक के 48 प्रमुख समाजसेवियों में स्थान दिया है। चेन सू चू ने कड़ी मेहनत से सब्जी बेचकर अब तक ढ़ाई करोड़ रूपये गरीब और असहाय लोगों को दान किये हैं। मिस चेन रात ढ़ाई बजे उठकर थोक सब्जी विक्रेता के पास पहुँचकर सब्जी लेती है और सुबह 5 बजे से अपनी दुकान खोल लेती है। वह कई स्कूलों के अनेक गरीब बच्चों को राशि लाखों रूपये दान कर चुकी है। अधिक मेहनत करने के कारण उसके पैरों का आकार टेढ़ा होने लगा है, उसका स्वास्थ्य सही नहीं रहता। वह कहती है जीवन का कोई भरोसा नहीं। मेरा धन किसी गरीब या असहाय के काम आ जाये तो मेरा सौभाग्य है। मिस चेन कभी मनोरंजन के कोई साधन नहीं खरीदे, विवाह नहीं किया, वह मंहगे कपड़े नहीं खरीदती, फर्श पर सोती है। उसका मानना है कि सही भोजन और सोने के सही स्थान के अलावा सब विलासिता के साधन हैं। उसके यह कार्य देखकर अनेक लोगों ने उसे धन दान देने का प्रयास किया परन्तु उसने विनम्रता यह कहकर मना कर दिया कि धन लेना आसान है लौटाना मुश्किल। उसने बचपन में धन का अभाव देखा है जब उसका भाई बिना इलाज के मर गया था।

ऐसे ही होते हैं दानी।

– चिंरजीलालजी बगड़ा

# हेड फोन और लापरवाही ने ले ली जान

1 दिसंबर को मोबाइल के हेड फोन से गाना सुन रहे देहरादून पब्लिक स्कूल के दो छात्रों की मौत हो गई। हुआ कुछ इस तरह कि उत्तरप्रदेश के गाजियाबाद शहर में 12वीं में पढ़ने वाला राहुल सिंह और उसका एक मित्र नवमीं में पढ़ने वाला कुलदीप सिंह राजनगर की रेल्वे पटरी से चलते हुये जा रहे थे और कानों में हेडफोन लगाकर गाने सुन रहे थे। जनशताब्दी एक्सप्रेस उसी पटरी पर पीछे से आ रही थी। रेल का ड्राइवर दो छात्रों को रेल्वे की पटरी पर देखकर घबरा गया। उसने जोर से हार्न बजाकर छात्रों को पटरी से हटाने की कोशिश की। परन्तु कानों में हेडफोन होने के कारण वे छात्र पीछे आ रही ट्रेन से नहीं बच पाये और ट्रेन उन दोनों के ऊपर से निकल गई। दोनों ट्रेन से बुरी तरह कट गये और दोनों की तुरंत मृत्यु हो गई। जांच में पता चला कि दोनों बारहवीं कक्षा के छात्र थे और स्कूल टाइम में घर से स्कूल जाने की बात कहकर जाते थे परन्तु स्कूल न जाकर वे दिन कहीं भी घूमते रहते थे और स्कूल समय पूरा होने के बाद घर पहुँच जाते थे। इसी तरह 23 नवंबर को दिल्ली में रहने वाली 21साल की प्रिया जैन की मौत हो गई । प्रिया जैन दिल्ली में ही विकास मार्ग पर मोबाईल के हेड फोन से गाने सुनते हुई जा रही थी, पीछे से आ रही बस का तेज हार्न उसे सुनाई नहीं दिया और बस के नीचे आ जाने से उसकी मौत हो गई ।

तो सावधान हो जाइये। अपने बच्चों पर नजर रखिये और कभी भी रास्ते पर चलते हुये, गाड़ी चलाते हुये कभी भी हेडफोन का प्रयोग न करें वरना हो सकता कि कोई भयंकर दुर्घटना आपकी प्रतीक्षा कर रही हो। सावधानी ही सुरक्षा है।

## चहकती चेतना अब इंटरनेट पर

आपकी सर्वाधिक प्रिय पत्रिका चहकती चेतना अब इंटरनेट पर उपलब्ध हो गई है। इस पत्रिका को www.vitragvani.com में पढ़ सकते हैं। इस वेबसाइट पर चहकती चेतना के साथ अनेक जैन ग्रन्थ, प्रवचन, फोटो, बाल साहित्य पढ़ सकते हैं। इस वेबसाइट पर अब तक प्रकाशित सभी अंक उपलब्ध हैं।

## इंटरनेट पर लोकप्रिय हो रहा है 'तोता तू क्यों रोता' गीत

इंटरनेट पर लोकप्रिय बेवसाइट www.youtube.com पर आचार्य कुन्दकुन्द सर्वोदय फाउन्डेशन द्वारा तैयार कुछ बाल गीत वीडियो youtube पर अपलोड किये गये हैं। इनमें से 'तोता तू क्यों रोता' अत्यंत लोकप्रिय हो रहा है। इसे अब तक 23 हजार से अधिक व्यक्ति इस गीत को देख चुके हैं। इन गीतों को श्री सौरभ शास्त्री, इंदौर द्वारा लोड किया गया है। आप भी वेबसाइट youtube पर ''तोता तू क्यों रोता'' के नाम इस गीत को देख सकते हैं।

## धार्मिक बाल गीतों की एक और वीडियो सी.डी. का विमोचन

### ''पाठशाला चलें हम'' का भव्य विमोचन

आचार्य कुन्दकुन्द सर्वोदय फाउन्डेशन जबलपुर द्वारा बाल वर्ग में धार्मिक संस्कारों के लिये विगत 7 वर्षों से लगातार प्रयास किये जा रहे हैं। इसके अंतर्गत अबतक संस्कार प्रेरक 10 वीडियो सी.डी और 2 गेम का निर्माण किया जा चुका है। इसी क्रम में अब वीडियो सी.डी. का ग्यारहवाँ पुष्प ''पाठशाला चलें हम'' का निर्माण हुआ है। इस अनूठी सी.डी. का विमोचन दाहोद में आयोजित श्री आदिनाथ दिगम्बर जिनबिम्ब पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव के अवसर पर किया गया। इस सी.डी. में 15 नये गीतों का संकलन है। इस वीडियो की शूटिंग दाहोद, चैतन्यधाम, अहमदाबाद, जबलपुर और मुम्बई में की गई है। इस सी.डी. के गीतों की रचना, संकलन एवं निर्देशन श्री विराग शास्त्री जबलपुर ने किया है। इस सी.डी.के निर्माण में श्री अतीत देवेन्द्रभाई शाह, तलौद एवं दाहोद के श्री सुरेशभाई कान्तिलाल गांधी, श्रीमति चेतना अनन्त कुमार गांधी, सीमंधर ज्वेलर्स परिवार, प्रीतेशभाई सतीशचंद भूता, श्रीमति रत्नमाला गुलाबचंद बेलोकर हस्ते पं. हेमंत शास्त्री, डासाला का आर्थिक सहयोग प्राप्त हुआ है।

## कुम्भोज बाहुबली में ब्र.गजा बहन ने दिया आशीर्वाद

महाराष्ट्र में प्राचीन जिनालय के रूप में विख्यात श्री कुम्भोज बाहुबली और श्री बाहुबली ब्रह्मचर्य आश्रम है। इसमें निवासरत 99 वर्षीय ब्र.गजाबेन से मुलाकात हुई। उन्हें पहले से ही हमारी संस्था द्वारा निर्मित संस्कार प्रेरक वीडियो के बारे में जानकारी थी। वहाँ ज्ञात हुआ कि उन्होंने इन सी.डी. को देखा है। उन्होंने इस कार्य के प्रति अपनी अनुमोदना व्यक्त करते हुये बाल वर्ग में संस्कारों के लिये अधिक प्रयास करने के लिये कहा और हमारे प्रयासों को आशीर्वाद और प्रेरणा प्रदान की। 99 वर्ष की आयु में ब्र.गजा बेन पूर्ण जाग्रत रहकर नियमित स्वाध्याय करती हैं। विशेष बात यह है कि ब्र.गजा बेन ने गुरुकुल में रहकर आत्म साधना के साथ सैकड़ों छात्रों को जिनधर्म का अध्ययन कराया है और आचार्य विद्यानन्दजी ने अपने बाल्यकाल में इन्हीं से जैन धर्म का आधारभूत अध्ययन किया है।

# जन्मदिवस

प्रशम स्वभावी मुनि हैं, नमन करें देवेन्द्र।
आतम की श्रद्धा करो, मिटे जगत का द्वन्द।।

प्रशम आशीष दोशी, मेहसाणा गुज. – 15 दिसम्बर

जन्म – मरण का नाश, धारो जिन सिद्धांत।
धर्मभावमय जीवन जियो, नमन करें राजेन्द्र।।

सिद्धांत जिगर कुमार गांधी, हिम्मतनगर गुज.–15 दिसम्बर

राग–द्वेष विजय करो, शची कहें पिंकेश।
यही प्रार्थना वीर से, मिटे जन्म का क्लेश।।

शची पिंकेश बोटादरा, घाटकोपर, मुम्बई – 6 जनवरी

यदि आप अपने जन्म दिवस पर संदेश
प्रकाशित करवाना चाहते हैं तो
आप 100 रू. के साथ
अपनी फोटो व जन्म तिथि भेजें।

Birthday

दिगम्बर जैन समाज की अत्यंत लोकप्रिय कृति
पण्डित श्री दौलतराम जी द्वारा रचित महान रचना

# छहढाला

अब सुनिये भी और अनुभव भी कीजिये

- संपूर्ण छहढ़ाला अब वीडियो के रूप में
- प्रत्येक ढ़ाल अलग-अलग मधुर राग में
- दिल को छू लेने वाले स्वर में प्रत्येक छंद के अर्थ सहित
- प्रत्येक छंद के अनुसार वीडियो दृश्य भी देखिये
- छहढ़ाला का एक नया अनुभव

निर्माण – आचार्य कुन्दकुन्द सर्वोदय फाउन्डेशन (रजि.) जबलपुर (म.प्र.)
परिकल्पना – सौरभ शास्त्री, इंदौर
संयोजन – गौरव शास्त्री, इंदौर
निर्देशन – विराग शास्त्री, जबलपुर
प्राप्ति स्थान – सर्वोदय, 702, जैन टेलीकॉम, फूटाताल, जबलपुर 482002 (म.प्र.)
मो.9373294684, 9300642434
E-mail : chehaktichetna@yahoo.com

## JANUARY

| Sun | Mon | Tue | Wed | Thu | Fri | Sat |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 1 | 2 | 3 | 4 | 5 | 6 | 7 |
| 8 | 9 | 10 | 11 | 12 | 13 | 14 |
| 15 | 16 | 17 | 18 | 19 | 20 | 21 |
| 22 | 23 | 24 | 25 | 26 | 27 | 28 |
| 29 | 30 | 31 | | | | |

## FEBRUARY

| Sun | Mon | Tue | Wed | Thu |
|---|---|---|---|---|
| | | | 1 | 2 |
| 5 | 6 | 7 | 8 | 9 |
| 12 | 13 | 14 | 15 | 16 |
| 19 | 20 | 21 | 22 | 23 |
| 26 | 27 | 28 | 29 | |

## APRIL

| Sun | Mon | Tue | Wed | Thu | Fri | Sat |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 1 | 2 | 3 | 4 | 5 | 6 | 7 |
| 8 | 9 | 10 | 11 | 12 | 13 | 14 |
| 15 | 16 | 17 | 18 | 19 | 20 | 21 |
| 22 | 23 | 24 | 25 | 26 | 27 | 28 |
| 29 | 30 | | | | | |

## MAY

| Sun | Mon | Tue | Wed | Thu |
|---|---|---|---|---|
| | | 1 | 2 | 3 |
| 6 | 7 | 8 | 9 | 10 |
| 13 | 14 | 15 | 16 | 17 |
| 20 | 21 | 22 | 23 | 24 |
| 27 | 28 | 29 | 30 | 31 |

संपर्क - सर्वोदय, 702, जैन टेलीव